ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-1 No. 3 January–December 2020

कोरोना संक्रमण और इंदौर में स्वच्छता

डॉ. राजू सी. जॉन

विभागाध्यक्ष, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग, प्रेस्टिज इंस्टीट्यूट ऑफ मैंनेजमेंट एंड साइंस, इंदौर

जितेंद्र जाखेटिया

शोधार्थी, देवी अहिल्या यूनिवर्सिटी, पत्रकारिता एवं जनसंचार अध्ययनशाला, इंदौर

सारांक्ष

कोरोना संक्रमण के समय में आज पूरा विश्व लोगों की जिंदगी को बचाने में लगा हुआ है। ऐसे में ऐसे कई मुद्दे है, जो लोगों की जिंदगी को बचाने में मददगार साबित हो रहे है, उसमें से एक है स्वच्छता। यह एक ऐसा मुद्दा है जो सीधे तौर पर कोरोना से जुड़ा हुआ है और कोरोना के संक्रमण को कम करने में एक महत्वपूर्ण कारक है। ऐसे समय में जब लोगों के सम्पर्क में आने से कोरोना फैल रहा है, स्वच्छता बनाए रखना एक जोखिम भरा काम है। लोग जब घरों में कैद होने को मजबूर है, तब स्वच्छता का काम करने वाले कर्मचारी अपनी जान की परवाह किये बिना लोगों के घरों से न केवल कचरा उठा रहे है बल्कि शहर को भी स्वच्छ बनाए हुए है। कोरोना काम में भी इंदौर को गंदगी से बचाये रखा गया, इसके लिये एक विशेष कार्ययोजना के तहत काम किया गया। यह योजना सफल भी रही। तीन साल तक लगातार स्वच्छता में देशभर में नंबर वन आने वाले इंदौर ने इस संवेदनशील समय में भी अपनी स्वच्छता की पहचान को बनाए रखा।

मुख्य बिंदू– कोरोना, इंदौर, स्वच्छता, मिशन, योजना।

प्रस्तावना

कोरोना वायरस के संक्रमण का दौर एक ऐसा दौर है, जब पूरा विश्व एक कतार में खड़ा हुआ नजर आ रहा है। हमेशा हर समस्या का समाधान सबसे पहले निकाल लेने वाले विश्व के विकसित देश भी इस बार उसी स्थिति में है जिस स्थिति में अन्य देश है। किसी भी देश के पास इस वायरस के कारण जिंदगी के समक्ष आ रही चुनौती का कोई समाधान नहीं था। इस समस्या का समाधान ढूंढने के लिए वैक्सीन तैयार करने का काम एक तरफ पूरे विश्व में प्रमुखता के साथ किया जा रहा था, वहीं दूसरी तरफ इस समस्या के बीच में किस तरह जनहानि को ज्यादा होने से रोकने की चुनौती भी थी। इसके लिए भी हर देश कोशिश करता हुआ नजर आ रहा था । ऐसा समय जब किसी भी देश में रहने वाले नागरिकों का जीवन ही संकट में पड़ा हुआ हो तब किसी और बात की तो कल्पना ही नहीं की जा सकती थी । हर देश लाक डाउन लागू करने या न करने और अपने देश के नागरिकों की जिंदगी को बचाने के लिए संघर्ष कर रहा है। यह चुनौती विश्व के हर देश के सामने एक समान रूप से मौजूद है। ऐसे में भला इस चुनौती से भारत देश भी किस तरह से अछूता रह सकता है। हमारे देश में भी इस चुनौती का स्वरूप बड़ा गंभीर है। इस गंभीरता के पीछे 2 बड़े कारण रहे हैं। पहला तो जनसंख्या के मान से विश्व का दूसरे नंबर का देश होने के कारण हमारे देश में आबादी का यह दबाव इस समस्या को गंभीर रूप देने में ज्यादा अग्रसर होता हुआ नजर आ

Copyright © 2020 Authors

रहा था। उसके साथ ही दूसरा मामला देश में अशिक्षा से जुड़ा हुआ है। आजादी के आज इतने सालों के बाद भी हमारे देश में अशिक्षा की हालत गंभीर स्थिति में मौजूद है जिसके चलते हुए नागरिक इस तरह की समस्याओं का सूझबूझ के साथ सामना नहीं कर सकते हैं।

कोराना वायरस के संक्रमण को फैलने से रोकने के लिए लागू किए गए लाक डाउन की स्थिति में बहुत सी समस्याएं देश के हर राज्य और हर शहर में उभरकर सामने आई। इन समस्याओं में एक तरफ जहां रोज कमाने खाने वाले व्यक्तियों के सामने पेट भरने का संकट था तो दूसरी तरफ पूरा व्यापार व्यवसाय बंद हो जाने के कारण देश की अर्थव्यवस्था पर पड़ने वाला नकारात्मक असर था। ऐसी स्थिति में कुछ और समस्याएं भी सामने थी। इसमें सबसे बड़ा मुद्दा था स्वच्छता का। वैसे तो हमारे देश में कभी भी स्वच्छता कोई मुद्दा ही नहीं रहा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के द्वारा 2 अक्टूबर 2014 को जब भारत को स्वच्छ बनाने का आह्वान किया गया, तबसे ही स्वच्छता हमारे देश में प्राथमिकता से किए जाने वाले कार्यों की सूची में आ सका । इसके बाद केंद्र सरकार द्वारा स्वच्छ भारत मिशन शुरू करते हुए स्वच्छता के काम को आगे बढ़ाया गया । पिछले 6 वर्षों के दौरान भारत में स्वच्छता के क्षेत्र में वह काम हुआ है जो आजादी के बाद से 70 वर्षों के दौरान भी नहीं हुआ था। कोरोना वायरस के संक्रमण के दौर में भी स्वच्छता एक बड़ा और प्रमुख मुद्दा बना हुआ था। यह एक ऐसा वायरस था जो कि नजर नहीं आ रहा है । यह स्पष्ट था कि एक दूसरे को छूने से, कपड़ों से, इस वायरस का संक्रमण फैल सकता है। खासतौर पर वैज्ञानिकों के द्वारा यह बताया गया कि आंख नाक कान और मुंह के साथ हाथ के द्वारा यह संक्रमण फैलता है। इसके कारण डर की स्थिति पूरे देश में बन गई है। जब डर पैदा हो गया हो तो फिर स्वच्छता को अंजाम कैसे दिया जाए। यह एक बड़ी चुनौती बन जाता है।

वर्ष 2016 और फिर 2017 और उसके बाद 2018, यह 3 वर्ष ऐसे थे जब केंद्र सरकार के द्वारा घोषित की गई स्वच्छता की रेटिंग में पूरे देश में मध्यप्रदेश के इंदौर शहर को देश का सबसे स्वच्छ शहर घोषित किया गया । इस शहर ने स्वच्छता के क्षेत्र में इतना, ऐसा और अनोखा काम किया कि उस काम को देखने और समझने के लिए कई राज्यों और शहरों के प्रतिनिधिमंडल इंदौर में आए । इन प्रतिनिधिमंडलों के द्वारा इंदौर में कामकाज को देखा और समझा गया और उसके आधार पर अपने राज्य और शहर को भी स्वच्छ बनाने की दिशा में काम शुरू किया गया। इस तरह स्वच्छता का रोल मॉडल बन चुके शहर में कोरोना वायरस संक्रमण के दौर में स्वच्छता को बनाए रखना एक बड़ी चुनौती था । एक ऐसी चुनौती जब व्यक्ति के सामने उसकी जिंदगी का खतरा पैदा हो गया हो उस समय स्वच्छता के काम को अंजाम आखिर किस तरह दिया जाए। इस बारे में जब साक्षात्कार पद्धति से इंदौर नगर निगम के स्वच्छता के कार्य को कराने वाले अधिकारियों से चर्चा कर उनके बीच में सर्वे का कार्य किया गया तो यह तथ्य उभरकर सामने आया कि इस अवधि में भी इंदौर के द्वारा स्वच्छता के कार्य को एक आदर्श शहर के रूप में अंजाम दिया गया है।

इंदौर नगर निगम के स्वच्छता के कार्य के प्रभारी अपर आयुक्त रजनीश कसेरा बताते हैं कि कोरोना के संक्रमण के दौर में स्वच्छता को अंजाम देना एक बड़ी चुनौती था। इस चुनौती का सामना इंदौर नगर निगम के द्वारा सफलता के साथ किया गया। निगम ने प्राथमिक तौर पर यह तय किया कि स्वच्छता के काम को करने वाले कर्मचारियों में से ऐसे कर्मचारी जिनकी उम्र 50 वर्ष या उससे अधिक है , उन्हें इस कठिन दौर में काम करने के लिए नहीं बुलाया जाए। ऐसा फैसला इसलिए लिया गया क्योंकि बार–बार यह तथ्य सामने आ रहा था कि 50 वर्ष से अधिक उम्र के व्यक्तियों में संक्रमण ज्यादा और जल्दी होने की

Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-1 No. 3 January–December 2020

आशंका रहती है। इस आशंका को ध्यान में रखते हुए ही निगम के द्वारा यह फैसला लिया गया । इस फैसले के परिणाम स्वरूप नगर निगम के इंदौर में स्वच्छता का काम करने वाले 6000 से अधिक कर्मचारियों में से 40 प्रतिशत कर्मचारियों को विश्राम दे दिया गया । इन कर्मचारियों को काम पर न आने के निर्देश दिए गए । इसके साथ ही निगम के द्वारा यह योजना बनाई गई कि शेष 60 प्रतिशत कर्मचारियों से हमें सारे शहर की साफ–सफाई के काम को अंजाम देना है और मुकाम तक पहुंचाना है।

देश के सबसे स्वच्छ शहर इंदौर में सफाई के काम को अंजाम देने के लिए शहर को तीन हिस्सों में बांटा गया। पहले हिस्से में उन सभी क्षेत्रों को रखा गया जहां हमेशा नियमित रूप से सफाई होती है। इसमें सभी मुख्य मार्ग, गलियां, कालोनियों के रास्ते, सड़कों पर लगे लीटर बिन आदि शामिल थे। इन सभी की सफाई का अभियान यथावत सामान्य दिनों की तरह ही रखा गया। इसके अलावा दूसरे हिस्से के रूप में उन क्षेत्रों को लिया गया जिन्हें जिला प्रशासन एवं स्वास्थ्य विभाग के द्वारा कैंटोनमेंट एरिया घोषित किया गया था। जिन एरिया में कोरोना का कोई मरीज निकल गया उस एरिया को प्रशासन के द्वारा इस तरह के एरिया के रूप में घोषित किया गया था। एक समय था जब इस तरह के क्षेत्रों की संख्या इंदौर शहर में ढाई सौ से ज्यादा हो गई थी। ऐसे क्षेत्रों को बेरीकेटिंग करके बंद कर दिया गया था। वहां किसी को आने और जाने नहीं दिया जा रहा था। ऐसे क्षेत्रों में सफाई के कार्य को अंजाम देना नगर निगम के लिए एक बड़ी चुनौती था। इस चुनौती को भी निगम के द्वारा स्वीकार किया गया। आम दिनों की तरह ही इन कैंटोनमेंट एरिया में भी सफाई के कार्य को किया गया। तीसरे हिस्से के रूप में उन क्षेत्रों को रखा गया जिसे प्रशासन एवं स्वास्थ्य विभाग के द्वारा क्वॉरेंटाइन क्षेत्र घोषित किया गया था। इसमें कई मैरिज गार्डन, कई होटल और अस्पताल शामिल थे। इन स्थानों पर कोरोना के संदिग्ध मरीजों को रखा जा रहा था। इन स्थानों पर संक्रमण फैलने के आसार सबसे ज्यादा थे । इन स्थानों पर बाहर के साथ ही साथ भवन के अंदर की सफाई और यहां तक की टॉयलेट की सफाई का कार्य भी नगर निगम के द्वारा किया गया।

कोरोना वायरस से संक्रमण के इस दौर में इंदौर शहर के अस्पतालों को प्रशासन के द्वारा तीन अलग–अलग श्रेणी में बांटा गया था। इसमें रेड, येलो और ग्रीन श्रेणी रखी गई थी। जिसमें सबसे ज्यादा खतरनाक रेड श्रेणी थी। इस श्रेणी में वह अस्पताल थे जिन अस्पतालों में कोरोना के मरीज उपचार के लिए भर्ती किए गए थे। ऐसे में इन अस्पतालों में सफाई एक बहुत बड़ी चुनौती थी। कोई भी व्यक्ति अपनी जान को जोखिम में डालकर इन अस्पतालों में जाकर सफाई के काम को अंजाम देना पसंद नहीं करता है। इस स्थिति में नगर निगम के द्वारा इन अस्पतालों में सफाई की जिम्मेदारी को भी संभाला गया। इन अस्पतालों में भवन के अंदर के हिस्से और यहां तक की टॉयलेट की सफाई भी निगम के द्वारा अपने कर्मचारियों के माध्यम से कराई गई। इसके साथ ही दूसरी श्रेणी में आने वाले यलो अस्पताल ऐसे थे जिनमें अन्य मरीजों के साथ ही साथ उन मरीजों को भी भर्ती किया गया था जिन को कोरोना होने का संदेह था । इन मरीजों की जांच रिपोर्ट आने और उनमें कोरोना की पुष्टि होने पर उन्हें रेड जोन के अस्पताल में भेज दिया जाता था और जब तक सैंपल की रिपोर्ट नहीं आती है तब तक इन अस्पतालों में ही इन मरीजों का इलाज चलता था। साथ ही इन अस्पतालों में अन्य बीमारियों के मरीज भी थे। इन मरीजों के इलाज के दौरान यहां पर संक्रमण के आसार सबसे ज्यादा थे। इन अस्पतालों में भी सफाई के काम को नगर निगम के द्वारा संभाला गया। तीसरी श्रेणी में ग्रीन जोन के अस्पताल थे। वहां सामान्य मरीज उपचार के लिए भर्ती थे। इन अस्पतालों में सफाई वहां के अपने स्टाफ के द्वारा बराबर की जा रही थी।

Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-1 No. 3 January–December 2020

इंदौर नगर निगम के विभिन्न क्षेत्रों का प्रभार संभालने वाले स्वास्थ्य अधिकारियों ने इस सर्वेक्षण में बताया कि निगम के द्वारा शहर के कैंटोनमेंट एरिया का कचरा उठाने के लिए सो वाहन अलग से लगाए गए। इसके साथ ही इन वाहनों को क्वॉरेंटाइन क्षेत्रों का भी कचरा उठाने की भी जिम्मेदारी सौंपी गई। इन वाहनों में जीपीएस सिस्टम भी लगाया गया। यह वाहन क्षेत्रों से कचरा उठाकर उस कचरे को लेकर सीधे ट्रेचिंग ग्राउंड में पहुंचे और किसी के द्वारा हाथ लगाए बगैर ही इस कचरे को डिस्पोज कर नष्ट किया जाए। इसके साथ ही नगर निगम के द्वारा रेड जोन और ग्रीन जोन के अस्पतालों के बायो मेडिकल वेस्ट को भी अलग से ले जाने की व्यवस्था की गई। इस बेस्ट को ले जाकर अलग से ट्रीट करते हुए सीधे नष्ट कर वेस्ट में से संक्रमण को फैलने की संभावनाओं को समाप्त किया गया। कोरोना वायरस के संक्रमण का दौर शुरू होने के पहले इंदौर में प्रतिदिन 11 सो से 13 से टन कचरा निकलता था, जबकि इस दौर के दौरान यह कचरा घटकर 500 से 700 टन हो गया । सफाई करने वाले कर्मचारी भी घट गए लेकिन कचरे का संग्रह करना एक बड़ी चुनौती बना हुआ था।

नगर निगम के द्वारा कोरोना वायरस के संक्रमण के इस दौर में भी पूर्व से प्रचलित अपनी घर घर से कचरा संग्रहण की व्यवस्था को कायम रखा गया। हर घर से हर दिन सूखा और गीला कचरा बराबर अलग–अलग लिया गया। इसके साथ ही कचरा गाड़ियों में एक तीसरा बॉक्स भी बनाया गया। इस बॉक्स में नागरिकों के द्वारा उपयोग किए गए मास्क अलग से लिए गए। ध्यान रहे कि मासक को सामान्य कचरे के साथ नहीं लिया जा सकता है। इस मास्क के माध्यम से कोराना का संक्रमण फैलने की आशंका बनी हुई रहती है। इस आशंका को निर्मूल करने के लिए ही निगम के द्वारा अपनी कचरा गाडियो में यह तीसरा डब्बा अलग से लगाया गया। इसके साथ ही इस अवधि के दौरान नगर निगम के द्वारा सारे शहर में हर गली मोहल्ले और सड़क को सैनिटाइज करने का भी अभियान चलाया गया। खासतौर पर कैंटोनमेंट एरिया मैं तो करीब–करीब हर दिन ही सैनिटाइजेशन का कार्य किया गया । इस तरह इंदौर नगर निगम के द्वारा देश के सबसे स्वच्छ शहर इंदौर में कोरोना संक्रमण के काल में भी स्वच्छता के काम को अंजाम देने के लिए एक आदर्श व्यवस्था को तैयार कर लागू किया गया ।

Copyright © 2020 Authors